

Ф1571054

Людмила Троценко

Ванильная
печенька

Сборник стихов

Мой сборник «Ванильная печалька» о глубокой и кристально чистой любви.

Какое счастье, когда наши чувства взаимны, когда люди живут друг другом, а если нет? Что тогда? Что чувствует влюбленный, но отверженный, не принятый человек. Чем живет? К чему стремится? О чем мечтает? И сбудутся ли его желания и ожидания?

Об этом Вы и прочтете на страницах сборника, погружаясь в мир обратной стороны любви.

Книга рассчитана на широкий круг читателей.

Оглавление

Часть I.

| | |
|--|-----------|
| Моя душа..... | 6 |
| Люблю..... | 8 |
| Мир вокруг..... | 9 |
| Тебе я посвящаю..... | 10 |
| Моя любовь..... | 12 |
| Я счастлив любить тебя..... | 14 |
| Ты – моя! | 16 |
| Любовь с ароматом ванили... | 17 |
| Присмак безнадії..... | 19 |
| Я помню..... | 21 |
| Ты далеко..... | 22 |
| Безмерная любовь..... | 23 |
| Я отдал бы все лучшее на свете..... | 24 |
| Только ты..... | 25 |
| Страстный плен..... | 26 |
| Моя мечта..... | 27 |

| | |
|---------------------------|-----------|
| Выбор..... | 29 |
| Шипы и шрамы..... | 31 |
| Пустота..... | 32 |
| Биение сердца..... | 33 |
| Над землей..... | 34 |
| Трещина..... | 36 |
| Хочу..... | 38 |

Часть II.

| | |
|-------------------------------------|-----------|
| С тобой..... | 39 |
| Луч света..... | 40 |
| Друг для друга..... | 41 |
| Сияние..... | 42 |
| А поутру они проснулись..... | 43 |
| Под кожей..... | 44 |
| До дрожи..... | 45 |